Admin

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

महादेवी वर्मा

साहित्य भवन लिमिटेड

HindiBooksOnline.blogspot.com

इलाहाबाद

चतुर्थावृत्ति : सन् १९५५ ई०

141613

तीन रुपए

814-H
827

HindiBooksOnline.blogspot.com

[illegible], हिन्दी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद

महादेवी

HindiBooksOnline.blogspot.com

परिचय

द कहते हैं, इस ग्रंथ की अधिकांश कवितायें
द किसे कहते हैं ? उसे छायावाद कहना
ह वाद ग्रस्त विषय है। स्वयं छायावादी-
निश्चित नहीं कर सके, कि वे अपनी नूतन
ो छायावाद कहें अथवा रहस्यवाद। इस
धि इतनी विस्तृत हो गई है कि उन सब का
ा रहस्यवाद में नहीं हो सकता। अतएव
कहने लगे हैं, किन्तु यह संज्ञा अति-व्याप्ति
ज़म (Mysticism) का यथार्थ-अनुवाद
है, छायावाद शब्द में उसकी छाया दिखलाई
यवाद में अस्पष्टता, अपरिच्छिन्नता और सर्व
झलकती है, वह चमत्कारक होकर अचिन्तनीय
त नहीं पाई जाती। वह स्निग्ध, मनोरम,
तना अचिन्तनीय नहीं, शायद इसीलिये उस
ो स्वीकृति की मुहर लग गई है। छायावाद
और अपने उद्देश की पूर्ति भी कर रहा है।
विषय में अधिक इदं कुतः की आवश्यकता
वेषय के लिये जब कोई शब्द रूढ़ि हो जाता
अपेक्षित आवश्यकता के लिये स्वीकृत समझा
क्या ? संसार में अधिकांश नामकरण इसी

आजकल छायावाद की कवितायें इस अधि-
युवक-दल उसकी ओर इतना आकृष्ट है कि
छाया-वाद-युग कह सकते हैं। फिर भी छाया-
ादिम-अवस्था में हैं, उद्गम से बाहर निकलती
के समान उनमें वेग है, प्रवाह है, उल्लास
बाँधित धीरता नहीं, वह स्थान-स्थान पर

HindiBookSonline.blogspot.com

तरंगाकुल और आविल भी है। ऐसा होना स्वाभाविक है, काल पाकर उनको सलधरातल भी मिलेगा, और उस समय वे मंजु-मंथर-गामिनी और यथेच्छस्वच्छतामयी एवं सरस होंगी। कवि कार्य सुगम नहीं, वह अगम्य है, वह सर्वथा निर्दोष नहीं हो सकता। जब महा-कवियों में भी भ्रम, प्रमाद, और त्रुटियाँ पाई जाती हैं, तो उस पर बात-बात में उँगली उठाना क्या उचित होगा, जिसने अभी कविता क्षेत्र में पदार्पण किया है। प्रेम से दोष प्रक्षालन के लिये किसी को सतर्क करना अवांछनीय नहीं, किन्तु ऐसे अवसरों पर सच्छिद्रका-प्रवृत्ति से काम लेना संगत नहीं। थोड़े समय में भी कतिपय-छायावादी कवियों ने हिन्दी-संसार में कीर्ति अर्जन की है, और उनमें पर्याप्त-भावुकता का विकास देखा गया है। उन्होंने अपने गहन पथ को सरल बनाया है, और कोमल-कान्त-पदावली पर अधिकार करके बड़ी मार्मिक कविताएँ की हैं। उन्हीं में से एक श्रीमती महादेवी वर्मा कवयित्री भी हैं।

यह ग्रन्थ उनका आदिम ग्रन्थ है फिर भी इसमें उनकी प्रतिभा का विलक्षण विकास देखा जाता है। ग्रन्थ सर्वथा निर्दोष नहीं, किन्तु इसमें अनेक इतनी सजीव और सुन्दर पंक्तियाँ हैं, कि उनके मधुर प्रवाह में उधर दृष्टि जाती ही नहीं। प्रफुल्ल-पाटल प्रसून में काँटे होते हैं, हों, किन्तु उसकी प्रफुल्लता और मनोरंजकता ही मुग्धकारिता की सम्पत्ति है। ऐसा कहकर मैं नियमन की अवहेलना नहीं करता हूँ—सहृदयता का नेत्रोन्मीलन कर रहा हूँ। कहा जा सकता है, एक स्त्री का उत्साह वर्द्धन करने के लिए बातें कही गईं। मैं कहूँगा यह विचार समीचीन नहीं; ऐसा करना स्त्री जाति की सर्वतोमुखी प्रतिभा को लांछित करना है। वास्तव में बात यह है कि ग्रन्थ की भावुकता और मार्मिकता उल्लेखनीय है, उसका कोमल शब्द-विन्यास भी अति आकर्षक है।

मैं श्रीमती महादेवी वर्मा का हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में सादर अभिनन्दन करता हूँ, और उनसे यह विनय भी, कि उनकी हृत्तंत्री के अपूर्व झङ्कार में भारतमाता के कण्ठ की वर्त्तमान ध्वनि भी श्रुति होनी चाहिये, इससे उनकी कीर्ति उज्ज्वल से उज्ज्वलतर होगी। माता की व्यथाओं के अनुभव करने की मार्मिकता मातृत्व पद की अधिकारिणी को ही यथातथ्य हो सकती है।

काशीधाम
२८-४-३०

हरिऔध

HindiBooksOnline.blogspot.com

सूची

		पृष्ठ
विसर्जन—	...	१
मिलन	...	३
अतिथि से	...	५
मिटने का खेल	...	६
संसार	...	७
अधिकार	...	९
कौन ?	...	१०
मेरा राज्य	...	११
चाह	...	१४
सुनापन	...	१५
सन्देह	...	१७
निर्वाण	...	१८
समाधि के दीप से—	...	१९
अभिमान	...	२०
उस पार	...	२२
मेरी साध—	...	२४
स्वप्न	...	२६
आना—	...	२८
निश्चय—	...	२९
अनुरोध—	...	३१
तब—	...	३२
मुर्झाया फूल	...	३४
कहाँ ?	...	३७
उत्तर	...	३८
फिर एक बार	...	३९
उनका प्यार—	...	४१
आँसू	...	४३

HindiBooksOnline.blogspot.com

		पृष्ठ
मेरा एकान्त	...	४४
उनमें	...	४६
मेरा जीवन	...	४७
सूना संदेश	...	५०
प्रतीक्षा	...	५१
विस्मृति	...	५४
अनन्त की ओर	...	५६
स्मारक	...	५७
मोल	...	५९
दीप	...	६०
वरदान	...	६२
स्मृति	...	६३
याद	...	६५
नीरव भाषण	...	६६
अनोखी भूल	...	६९
आँसू की माला	...	७१
फूल	...	७४
खोज	...	७६
जो तुम आ जाते एक बार	...	७८
परिचय	...	७९

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

HindiBooksOnline.blogspot.com

विसर्जन—

निशा की, धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल,
कली से कहता था मधुमास
'बता दो मधुमदिरा का मोल';

'झटक जाता था पागल वात
धूल में तुहिनकणों के हार;'
सिखाने जीवन का सङ्गीत
तभी तुम आये थे इस पार।

बिछाती थीं सपनों के जाल
तुम्हारी वह करुणा की कोर,
'गई वह अधरों की मुस्कान
मुझे मधुमय पीड़ा में बोर;

HindiBooksOnline.blogspot.com

भूलती थी मैं सीखे राग
बिछलते थे कर बारम्बार,
तुम्हें तब आता था करुणेश !
उन्हीं मेरी भूलों पर प्यार !

गए तब से कितने युग बीत
हुए कितने दीपक निर्वाण !
नहीं पर मैंने पाया सीख
तुम्हारा सा मनमोहन गान।

× × ×

नहीं अब गाया जाता देव !
थकी अँगुली, हैं ढीले तार
विश्ववीणा में अपनी आज
मिला लो यह अस्फुट झङ्कार !

१६२८ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

मिलन

रजतकरों की मृदुल तूलिका-
से ले तुहिनबिन्दु सुकुमार,
कलियों पर जब आँक रहा था
करुण कथा अपनी संसार;

तरल हृदय की उच्छ्वासें जब
भोले मेघ लुटा जाते,
अन्धकार दिन की चोटों पर
अञ्जन बरसाने आते।

मधु की बूँदों में छलके जब
तारक लोकों के शुचि फूल,
विधुर हृदय की मृदु कम्पन सा
सिहर उठा वह नीरव कूल;

मूक प्रणय से, मधुर व्यथा से,
स्वप्नलोक के से आह्वान,
वे आये चुपचाप सुनाने
तब मधुमय मुरली की तान।

HindiBookOnline.blogspot.com

नीहार

चल चितवन के दूत सुना
उनके, पल में रहस्य की बात,
मेरे निर्निमेष पलकों में
मचा गए क्या क्या उत्पात !

जीवन है उन्माद तभी से
निधियां प्राणों के छाले,
मांग रहा है विपुल वेदना-
के मन प्याले पर प्याले !

पीड़ा का साम्राज्य बस गया
उस दिन दूर क्षितिज के पार,
मिटना था निर्वाण जहां
नीरव रोदन था पहरेदार।

× × ×

कैसे कहती हो सपना है
अलि ! उस मृक मिलन की बात ?
भरे हुए अबतक फूलों में
मेरे आँसू उनके हास !

१६२६ अप्रैल

HindiBooksOnline.blogspot.com

अतिथि से

वनबाला के गीतों सा
निर्जन में बिखरा है मधुमास,
इन कुञ्जों में खोज रहा है
सूना कोना मन्द बतास।

नीरव नभ के नयनों पर
हिलती हैं रजनी की अलकें,
जाने किसका पंथ देखतीं
बिछुकर फूलों की पलकें!

मधुर चाँदनी धो जाती है
खाली कलियों के प्याले,
बिखरे से हैं तार आज
मेरी वीणा के मतवाले :

पहली सी झङ्कार नहीं है
और नहीं वह मादक राग,
अतिथि! किन्तु सुनते जाओ
टूटे तारों का करुण विहाग!

१६२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

मिटने का खेल

मैं अनन्त पथ में लिखती जो
सस्मित सपनों की बातें,
उनको कभी न धो पायेंगी
अपने आँसू से रातें!

उड़ उड़ कर जो धूल करेगी
मेघों का नभ में अभिषेक,
अमिट रहेगी उसके अञ्चल—
में मेरी पीड़ा की रेख।

तारों में प्रतिबिम्बित हो
मुस्कायेंगी अनन्त आँखें,
होकर सीमाहीन, शून्य में
मंडरायेंगी अभिलाषें।

वीणा होगी मूक बजाने—
वाला होगा अन्तर्धान,
विस्मृति के चरणों पर आकर
लोटेंगे सौ सौ निर्वाण!

जब असीम से हो जायेगा
मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तुम देव! अमरता
खेलेगी मिटने का खेल!

१६२१ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

संसार

निश्वासों का नीड़, निशा का
बन जाता जब शयनागार,
लुट जाते अभिराम छिन
मुक्ताकलियों के वन्दनवार,

तब बुझते तारों के नीरव नयनों का यह हाहाकार,
आँसू से लिख लिख जाता है 'कितना अस्थिर है संसार' !

हँस देता जब प्रात, सुनहरे
अञ्चल में बिखरा रोली,
लहरों की बिछुलन पर जब
मचली पड़ती किरणें भोली,

तब कलियां चुपचाप उठाकर पल्लव के घूँघट सुकुमार,
छलकी पलकों से कहती हैं 'कितना मादक है संसार !'

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

देकर सौरभ दान पवन से
कहते जब मुरझाये फूल,
'जिसके पथ में बिछे वही
क्यों भरता इन आँखों में धूल?

'अब इनमें क्या सार' मधुर जब गाती भौंरों की गुञ्जार,
मर्मर का रोदन कहता है 'कितना निष्ठुर है संसार !'

स्वर्ण वर्ण से दिन लिख जाता
जब अपने जीवन की हार,
गोधूली, नभ के आँगन में
देती अगणित दीपक बार,

हँसकर तब उस पार तिमिर का कहता बढ़ बढ़ पारावार,
'बीते युग, पर बना हुआ है अब तक मतवाला संसार !'

स्वप्नलोक के फूलों से कर
अपने जीवन का निर्माण,
'अमर हमारा राज्य' सोचते
हैं जब मेरे पागल प्राण,

आकर तब अज्ञात देश से जाने किसकी मृदु झङ्कार,
गा जाती है करुण स्वरों में 'कितना पागल है संसार !'

१२२६मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

अधिकार

वे मुस्काते फूल, नहीं—
जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं—
जिनको भाता है बुझ जाना ;

वे नीलम के मेघ, नहीं—
जिनको है घुल जाने की चाह,
वह अनन्त ऋतुराज, नहीं—
जिसने देखी जाने की राह।

वे सूने से नयन, नहीं—
जिनमें बनते आँसू-मोती,
वह प्राणों की सेज, नहीं
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती ;

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं—
जिसने जाना मिटने का स्वाद !

× × ×

क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार ?
रहने दो हे देव ! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार !

१६२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

कौन ?

ढुलकते आँसू सा सुकुमार
बिखरते सपनों सा अज्ञात,
चुरा कर ऊषा का सिन्दूर
मुस्कराया जब मेरा प्रात,

छिपा कर लाली में चुपचाप
सुनहला प्याला लाया कौन ?

× × ×

हँस उठे छूकर टूटे तार
प्राण में मँडराया उन्माद,
व्यथा मीठी ले प्यारी प्यास
सो गया बेसुध अन्तर्नाद,

घूँट में थी साकी की साध
सुना फिर फिर जाता है कौन ?

१९२९ जुलाई

HindiBooksOnline.blogspot.com

मेरा राज्य

रजनी ओढ़े जाती थी
झिलमिल तारों की जाली,
उसके बिखरे वैभव पर
जब रोती थी उजियाली;

शशि को छूने मचली सी
लहरों का कर कर चुम्बन,
बेसुध तम की छाया का
तटनी करती आलिङ्गन।

अपनी जब करुण कहानी
कह जाता है मलयानिल,
आँसू से भर जाता जब—
सूखा अवनी का अञ्चल;

HindiBook30nline.blogspot.com

पल्लव के डाल हिंडोले
सौरभ सोता कलियों में,
छिप छिप किरणें आती जब
मधु से सींची गलियों में।

आँखों में रात बिता जब
विधु ने पीला मुख फेरा,
आया फिर चित्र बनाने
प्राची में प्रात चितेरा;

कन कन में जब छाई थी
वह नवयौवन की लाली,
मैं निर्धन तब आई ले,
सपनों से भर कर डाली।

जिन चरणों की नखआभा—
ने हीरकजाल लजाये,
उन पर मैंने धुँधले से
आँसू दो चार चढ़ाये!

इन ललचाई पलकों पर
पहरा जब था व्रीड़ा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला
उस चितवन ने पीड़ा का!!

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

उस सोने के सपने को
देखे कितने युग बीते !
आँखों के कोष हुए हैं
मोती बरसा कर रीते ;

अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जला कर
करती रहती दीवाली ।

मेरी आहें सोती हैं
इन ओठों की ओटों में,
मेरा सर्वस्व छिपा है
इन दीवानी चोटों में !!

चिन्ता क्या है, हे निर्मम !
बुझ जाये दीपक मेरा ;
हो जायेगा तेरा ही
पीड़ा का राज्य अँधेरा !

१९२८ जुलाई

HindiBooksOnline.blogspot.com

चाह

चाहता है यह पागल प्यार,
अनोखा एक नया संसार !

कलियों के उच्छ्वास शून्य में तानें एक वितान,
तुहिनकणों पर मृदु कम्पन से सेज बिछादें गान;

जहाँ सपने हों पहरेदार,
अनोखा एक नया संसार !

करते हों आलोक जहाँ बुझ बुझ कर कोमल प्राण,
जलने में विश्राम जहां मिटने में हों निर्वाण ;

वेदना मधुमदिरा की धार,
अनोखा एक नया संसार !

मिल जाव उस पार क्षितिज के सीमा सीमाहीन,
गर्वीले नक्षत्र धरा पर लोट होकर दीन !

उदधि हो नभ का शयनागार,
अनोखा एक नया संसार !

जीवन की अनुभूति तुला पर अरमानों से तोल,
यह अबोध मन मूक व्यथा से ले पागलपन मोल !

करें दृग आँसू का व्यापार,
अनोखा एक नया संसार !

१९२९ जुलाई

HindiBooksOnline.blogspot.com

सूनापन

मिल जाता काले अंजन में
सन्ध्या की आँखों का राग,
जब तारे फैला फैला कर
सूने में गिनता आकाश;

उसकी खोई सी चाहों में
घुट कर मूक हुई आहों में !

झूम झूम कर मतवाली सी
पिये वेदनाओं का प्याला,
प्राणों में रूँधी निश्वासें
आती ले मेघों की माला;

उसके रह रह कर रोने में
मिल कर विद्युत के खोने में !

धीरे से सूने आँगन में
फैला जब जाती हैं रातें,
भर भरके ठंढी साँसों में
मोती से आँसू की पातें;

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

उनकी सिहराई कम्पन में
किरणों के प्यासे चुम्बन में !

जाने किस बीते जीवन का
संदेशा दे मंद समीरण,
छू देता अपने पंखों से
मुर्झाये फूलों के लोचन ;

उनके फीके मुस्काने में
फिर अलसाकर गिर जाने में !

आँखों की नीरव भिक्षा में
आँसू के मिटते दाग़ों में,
ओठों की हँसती पीड़ा में
आहों के बिखरे त्यागों में ;

कन कन में बिखरा है निर्मम !
मेरे मानस का सूनापन !

१६२६ सितम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

सन्देह—

बहती जिस नक्षत्रलोक में
निद्रा के श्वासों से वात,
रजतरश्मियों के तारों पर
बेसुध सी गाती थी रात!

अलसाती थीं लहरें पी कर
मधुमिश्रित तारों की ओस,
भरती थीं सपने गिन गिन कर
मूक व्यथायें अपने कोष।

दूर उन्हीं नीलमकूलों पर
पीड़ा का ले झीना तार,
उच्छ्वासों की गूँथी माला
मैंने पाई थी उपहार।

यह विस्मृति है या सपना वह
या जीवन-विनिमय की भूल!
क्यों पड़ते जाते हैं
माला के सोने से फूल?

१६२६ जनवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

निर्वाण—

घायल मन लेकर सो जाती
मेघों में तारों की प्यास,
यह जीवन का ज्वार शून्य का
करता है बढ़ कर उपहास।

चल चपला के दीप जलाकर
किसे ढूँढता अन्धाकार?
अपने आँसू आज पिलादो
कहता किन से पारावार?

झुक झुक झूम झूम कर लहरें
भरतीं बूँदों के मोती;
यह मेरे सपनों की छाया
झोंकों में फिरती रोती;

आज किसी के मसले तारों
की वह दूरागत झङ्कार,
मुझे बुलाती है सहसी सी
झञ्झा के परदों के पार।

इस असीम तम में मिलकर
मुझको पल भर सो जाने दो,
बुझ जाने दो देव! आज
मेरा दीपक बुझ जाने दो!

१९२९ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

समाधि के दीप से—

जिन नयनों की विपुल नीलिमा
में मिलता नभ का आभास,
जिनका सीमित उर करता था
सीमाहीनों का उपहास :

जिस मानस में डूब गए—
कितनी करुणा कितने तूफ़ान !
लोट रहा है आज धूल में
उन मतवालों का अभिमान ।

जिन अधरों की मन्द हँसी थी
नव अरुणोदय का उपमान,
किया देव ने जिन प्राणों का
केवल सुषमा से निर्माण :

तुहिनबिन्दु सा, मञ्जु सुमन सा
जिन का जीवन था सुकुमार,
दिया उन्हें भी निठुर काल ने
पाषाणों का शयनागार ।

× × ×

कण कण में बिखरी सोती है
अब उनके जीवन की प्यास,
जगा न दे हे दीप ! कहीं—
उनको तेरा यह क्षीण प्रकाश !

HindiBooksOnline.blogspot.com

अभिमान—

छाया की आँखमिचौनी
मेघों का मतवालापन,
रजनी के श्यामकपोलों
पर ढरकीले श्रम के कन;

फूलों की मीठी चितवन
नभ की ये दीपावलियाँ,
पीले मुख पर सन्ध्या के
वे किरणों की फुलझड़ियाँ।

विधु की चाँदी की थाली
मादक मकरन्द भरी सी,
जिस में उजियारी रातें
लुटतीं घुलतीं मिसरी सीं;

भिक्षुक से फिर जाओगे
जब लेकर यह अपना धन,
करुणामय तब समझोगे
इन प्राणों का मंहगापन!

क्यों आज दिये देते हो
अपना मरकत सिंहासन?
यह है मेरे मरु मानस-
का चमकीला सिकताकन।

HindiBooksOnline.blogspot.com

आलोक यहाँ लुटता है
बुझ जाते हैं तारा गण,
अविराम जला करता है
पर मेरा दीपक सा मन!

जिसकी विशाल छाया में
जग बालक सा सोता है,
मेरी आँखों में वह दुःख
आँसू बन कर खोता है!

जग हँसकर कह देता है
मेरी आँखें हैं निर्धन,
इनके बरसाये मोती
क्या वह अबतक पाया गिन?

मेरी लघुता पर आती
जिस दिव्य-लोक को व्रीड़ा,
उसके प्राणों से पूछो
वे पाल सकेंगे पीड़ा?

उनसे कैसे छोटा है
मेरा यह भिक्षुक जीवन?
उन में अनन्त करुणा है
इस में असीम सूनापन!

१९२६ जनवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

उस पार—

घोर तम छाया चारो ओर
घटायें घिर आईं घन घोर;
वेग मारुत का है प्रतिकूल
हिले जाते हैं पर्वतमूल ;
गरजता सागर बारम्बार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

तरङ्गें उठीं पर्वताकार
भयंकर करतीं हाहाकार,
अरे उनके फेनिल उच्छ्वास
तरी का करते हैं उपहास ;
हाथ से गई छूट पतवार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

ग्रास करने नौका, स्वच्छन्द
घूमते फिरते जलचर वृन्द ;
देख कर काला सिन्धु अनन्त
हो गया हा साहस का अन्त !
तरङ्गें हैं उत्ताल अपार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

बुझ गया वह नक्षत्र प्रकाश
चमकती जिसमें मेरी आश ;
रैन बोली सज कृष्ण दुकूल
विसर्जन करो मनोरथ फूल ;
न लाये कोई कर्णधार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

सुना था मैंने इसके पार
बसा है सोने का संसार,
जहाँ के हंसते विहग ललाम
मृत्यु छाया का सुनकर नाम !
धरा का है अनन्त शृंगार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

जहाँ के निर्झर नीरव गान
सुना करते अमरत्व प्रदान :
सुनाता नभ अनन्त झङ्कार
बजा देता है सारे तार :
भरा जिसमें असीम सा प्यार,
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

पुष्प में है अनन्त मुस्कान
त्याग का है मारुत में गान :
सभी में है स्वर्गीय विकाश
वहां कोमल कमनीय प्रकाश :
दूर कितना है वह संसार !
कौन पहुँचा देगा उस पार ?

× × ×

सुनायी किसने पल में आन
कान में मधुमय मोहक तान ?
'तरी को ले जाओ मंझधार
डूब कर हो जाओगे पार :
विसर्जन ही है कर्णाधार,
वही पहुँचा देगा उस पार !'

१९२४ जुलाई

HindiBooksOnline.blogspot.com

मेरी साध—

थकी पलकें सपनों पर डाल
व्यथा में सोता हो आकाश,
छलकता जाता हो चुपचाप
बादलों के उर से अवसाद ;

वेदना की वीणा पर देव
शून्य गाता हो नीरव राग,
मिलाकर निश्वासों के तार
गूँथती हो जब तारे रात :

उन्हीं तारक फूलों में देव
गूँथना मेरे पागल प्राण—
हठीले मेरे छोटे प्राण !

किसी जीवन की मीठी याद
लुटाता हो मतवाला प्रात,
कली अलसाई आँखें खोल
सुनाती हों सपने की बात ;

खोजते हों खोया उन्माद
मन्द मलयानिल के उच्छ्वास,
मांगती हो आँसू के बिन्दु
मूक फूलों की सोती प्यास :

पिला देना धीरे से देव
उसे मेरे आँसू सुकुमार—
सजीले ये आँसू के हार !

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

मचलते उद्गारों में खेल
उलझते हों किरणों के जाल,
किसी की छूकर ठंढी सांस
सिहर जाती हों लहरें बाल :

चकित सा सूने में संसार
गिन रहा हो प्राणों के दाग़,
सुनहली प्याली में दिनमान
किसी का पीता हो अनुराग :

डाल देना उसमें अनजान
देव मेरा चिर संचित राग—
अरे यह मेरा मादक राग !

मत्त हो स्वप्निल हाला डाल
महानिद्रा में पारावार,
उसी की धड़कन में तूफ़ान
मिलाता हो अपनी झंकार :

झकोरों से मोहक संदेश
कह रहा हो छाया का मौन,
सुप्त आहों का दीन विषाद
पूछता हो आता है कौन ?

बहा देना आकर चुपचाप
तभी यह मेरा जीवन फूल—
सुभग मेरा मुरझाया फूल !

१९२६ जनवरी

४HindiBooksOnline.blogspot.com

स्वप्न—

इन हीरक से तारों को
कर चूर बनाया प्याला
पीड़ा का सार मिलाकर
प्राणों का आसव ढाला।

मलयानिल के झोंकों में
अपना उपहार लपेटे,
मैं सूने तट पर आई
बिखरे उद्‌गार समेटे।

काले रजनी अञ्चल में
लिपटीं लहरें सोती थीं,
मधु मानस का बरसाती
वारिदमाला रोती थी।

नीरव तम की छाया में
छिप सौरभ की अलकों में,
गायक वह गान तुम्हारा
आ मंडराया पलकों में!

HindiBooksOnline.blogspot.com

आना—

जो मुखरित कर जाती थी
मेरा नीरव आवाहन,
मैं ने दुर्बल प्राणों की
वह आज सुला दी कम्पन !

थिरकन अपनी पुतली की
भारी पलकों में बाँधी,
निस्पन्द पड़ी है आँखें
बरसाने वाली आँधी।

जिसके निष्फल जीवन ने
जल जल कर देखीं राहें !
निर्वाण हुआ है देखो
वह दीप लुटा कर चाहें !

निर्घोष घटाओं में छिप
तड़पन चपला की सोती,
झंझा के उन्मादों में
घुलती जाती बेहोशी।

करुणामय को भाता है
तम के परदों में आना,
हे नभ की दीपावलियों !
तुम पल भर को बुझ जाना !

फरवरी १९२६

HindiBooksOnline.blogspot.com

निश्चय--

कितनी रातों की मैंने
नहलाई है अंधियारी,
धो डाली है संध्या के
पीले सेंदुर से लाली :

नभ के धुंधले कर डाले
अपलक चमकीले तारे,
इन आहों पर तैरा कर
रजनीकर पार उतारे।

वह गई क्षितिज की रेखा
मिलती है कहीं न हेरे,
भूला सा मत्त समीरण
पागल सा देता फेरे!

अपने उर पर सोने से
लिखकर कुछ प्रेम कहानी,
सहते हैं रोते बादल
तूफानों की मनमानी।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

इन बूँदों के दर्पण में
करुणा क्या झांक रही है ?
क्या सागर की धड़कन में
लहरें बढ़ आँक रही हैं ?

पीड़ा मेरे मानस से
भीगे पट सी लिपटी है,
डूबी सी यह निश्वासें
ओठों में आ सिमटी हैं।

मुझ में विक्षिप्त झकोरे !
उन्माद मिला दो अपना,
हाँ नाच उठे जिसको छू
मेरा नन्हा सा सपना !!

पीड़ा टकरा कर फूटे
घूमें विश्राम विकल सा,
तम बढ़े मिटा डाले सब
जीवन काँपे दलदल सा।

फिर भी इस पार न आवे
जो मेरा नाविक निर्मम,
सपनों से बाँध डुबाना
मेरा छोटा सा जीवन !

१९२८ सितम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

अनुरोध—

इस में अतीत सुलझाता
अपने आँसू की लड़ियाँ,
इस में असीम गिनता है
वे मधुमासों की घड़ियाँ;

इस अञ्चल में चित्रित हैं
भूलीं जीवन की हारें,
उनकी छलनामय छाया
मेरी अनन्त मनुहारें।

वे निर्धन के दीपक सी,
बुझती सी मूक व्यथायें,
प्राणों की चित्रपटी में
आँकी सी करुण कथायें;

मेरे अनन्त जीवन का
वह मतवाला बालकपन,
इस में थक कर सोता है
लेकर अपना चञ्चल मन।

× × ×

ठहरो बेसुध पीड़ा को
मेरी न कहीं छू लेना!
जबतक वे आ न जगावें
बस सोती रहने देना!!

१९२९ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

तब—

शून्य से टकरा कर सुकुमार
करेगी पीड़ा हाहाकार,
बिखर कर कन कन में हो व्याप्त
मेघ बन छा लेगी संसार !

पिघलते होंगे यह नक्षत्र
अनिल की जब छू कर निश्वास,
निशा के आँसू में प्रतिबिम्ब
देख निज काँपेगा आकाश !

विश्व होगा पीड़ा का राग,
निराशा जब होगी वरदान,
साथ लेकर मुर्झाई साध
बिखर जायेंगे प्यासे प्राण।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

उदधि नभ को कर लेगा प्यार
मिलेंगे सीमा और अनन्त,
उपासक ही होगा आराध्य
एक होंगे पतझार वसन्त।

बुझेगा जलकर आशादीप
सुला देगा आकर उन्माद,
कहाँ कब देखा था वह देश!
अतल में डूबेगी यह याद!

प्रतीक्षा में मतवाले नैन
उड़ेंगे जब सौरभ के साथ,
हृदय होगा नीरव अम्लान
मिलोगे क्या तब हे अज्ञात!

१६२८ जनवरी

HindiBookOnline.blogspot.com

मुर्झाया फूल

था कली के रूप शैशव—
में अहो सूखे सुमन!
मुस्कराता था, खिलाती
अंक में तुझको पवन।

खिल गया जब पूर्ण तू—
मञ्जुल सुकोमल पुष्पवर!
लुब्ध मधु के हेतु मंडराते
लगे आने भ्रमर।

स्निग्ध किरणें चन्द्र की—
तुझको हँसाती थीं सदा,
रात तुझ पर वारती थी
मोतियों की सम्पदा।

लोरियाँ गाकर मधुप
निद्रा विवश करते तुझे,
यत्न माली का रहा—
आनन्द से भरता तुझे।

HindiBooksOnline.blogspot.com

कर रहा अटखेलियाँ—
इतरा सदा उद्यान में,
अन्त का यह दृश्य आया—
था कभी क्या ध्यान में ?

सो रहा अब तू धरा पर—
शुष्क बिखराया हुआ,
गन्ध कोमलता नहीं
मुख मंजु मुरझाया हुआ।

आज तुझको देखकर
चाहक भ्रमर घाता नहीं.
लाल अपना राग तुझ पर
प्रात बरसाता नहीं।

जिस पवन ने अङ्क में—
ले प्यार था तुझ को किया,
तीव्र झोंके से सुला—
उसने तुझे भू पर दिया

कर दिया मधु और सौरभ
दान सारा एक दिन,
किन्तु रोता कौन है
तेरे लिए दानी सुमन ?

HindiBooksOnline.blogspot.com

मत व्यथित हो फूल ! किस को
सुख दिया संसार ने ?
स्वार्थमय सबको बनाया—
है यहाँ करतार ने ।

विश्व में हे फूल ! तू—
सब के हृदय भाता रहा !
दान कर सर्वस्व फिर भी—
हाय हर्षाता रहा ।

जब न तेरी ही दशा पर
दुख हुआ संसार को,
कौन रोयेगा सुमन !
हम से मनुज निःसार को ?

१६२३ जनवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

कहाँ ?

घोर घन की अवगुण्ठन डाल
करुण सा क्या गाती है रात ?
दूर छूटा वह परिचित कूल
कह रहा है यह झञ्झावात,

लिए जाते तरणी किस ओर
अरे मेरे नाविक नादान !

हो गया विस्मृत मानवलोक
हुए जाते हैं बेसुध प्राण,
किन्तु तेरा नीरव संगीत
निरन्तर करता है आह्वान;

यही क्या है अनन्त की राह
अरे मेरे नाविक नादान ?

१९२९ मार्च

HindiBooksOnline.blogspot.com

उत्तर

इस एक बूँद आँसू में
चाहे साम्राज्य बहा दो,
वरदानों की वर्षा से
यह सूनापन बिखरा दो;

इच्छाओं की कम्पन से
सोता एकान्त जगा दो,
आशा की मुस्काहट पर
मेरा नैराश्य लुटा दो।

चाहे जर्जर तारों में
अपना मानस उलझा दो,
इन पलकों के प्यालों में
सुख का आसव छलका दो;

मेरे बिखरे प्राणों में
सारी करुणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में
अपना अस्तित्व मिटा दो!

पर शेष नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा
तुम में ढूँढूँगी पीड़ा!

HindiBooksOnline.blogspot.com

फिर एक बार

मैं कम्पन हूँ तू करुण राग
मैं आँसू हूँ तू है विषाद,
मैं मदिरा तू उसका खुमार
मैं छाया तू उसका अधार:

मेरे भारत मेरे विशाल
मुझको कह लेने दो उदार!
फिर एक बार बस एक बार!

जिनसे कहती बीती बहार
'मतवालो जीवन है असार'!
जिन झंकारों के मधुर गान
ले गया छीन कोई अजान;

उन तारों पर बनकर विहाग
मंडरा लेने दो हे उदार!
फिर एक बार बस एक बार!

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

कहता है जिनका व्यथित मौन
'हम सा निष्फल है आज कौन' ?
निधन के धन सी हास रेख
जिनकी जग ने पाई न देख,

उन सूखे ओठों के विषाद—
में मिल जाने दो हे उदार !
फिर एक बार बस एक बार !

जिन आँखों का नीरव अतीत
कहता 'मिटना है मधुर जीत';
जिन पलकों में तारे अमोल
आँसू से करते हैं किलोल,

उस चिन्तित चितवन में विहास
बन जाने दो मुझको उदार !
फिर एक बार बस एक बार !

फूलों सी हो पल में मलीन
तारों सी सुने में विलीन,
ढुलती बूँदों से ले विराग
दीपक से जलने का सुहाग;

अन्तरतम की छाया समेट
मैं तुझमें मिट जाऊँ उदार !
फिर एक बार बस एक बार !

१९२१ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

उनका प्यार—

समीरण के पंखों में गूँथ
लुटा डाला सौरभ का भार,
दया, ढुलका मानस मकरन्द
मधुर अपनी स्मृति का उपहार;
    अचानक हो क्यों छिन्न मलीन
    लिया फूलों का जीवन छीन !

दैव सा निष्ठुर, दुःख सा मूक
स्वप्न सा, छाया सा अनजान,
वेदना सा, तम सा गम्भीर
कहाँ से आया वह आह्वान ?
    हमारी हँसती चाह समेट
    लेगया कौन तुम्हें किस देश ?

छोड़ कर जो वीणा के तार
शून्य में लय हो जाता राग,
विश्व छा लेती छोटी आह
प्राण का बन्दीखाना त्याग;
    नहीं जिसका सीमा में अन्त
    मिली है क्या वह साध अनन्त ?

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

ज्योति बुझ गई रह गया दीप
रही झङ्कार गया वह गान,
विरह है या अखण्ड संयोग
शाप है या यह है वरदान?

पूछता आकर हाहाकार
कहाँ हो? जीवन के उस पार?

मधुर जीवन था मुग्ध बसन्त
विधुर बनकर आती क्यों याद?
'सुधा' वसुधा में लाया एक
प्राण में लाती एक विषाद;

बुझाकर छोटा दीपालोक
हुई क्या हो असीम में लोप?

हुई सोने की प्रतिमा क्षार
साधनायें बैठी हैं मौन,
हमारा मानसकुञ्ज उजाड़
दे गया नीरव रोदन कौन?
नहीं क्या अब होगा स्वीकार
पिघलती आँखों का उपहार?

बिखरते स्वप्नों की तस्वीर
अधूरा प्राणों का सन्देश,
हृदय की लेकर प्यासी साध
बसाया है अब कौन विदेश?
रो रहा है चरणों के पास
चाह जिनकी थी उनका प्यार।

HindiBooksOnline.blogspot.com

आँसू

यहीं है वह विस्मृत सङ्गीत
खो गई है जिसकी झङ्कार,
यहीं सोते हैं वे उच्छ्वास
जहाँ रोता बीता संसार :

यहीं है प्राणों का इतिहास
यहीं बिखरे वसन्त का शेष,
नहीं जो अब आयेगा लौट
यही उसका अक्षय संदेश।

× × ×

समाहित है अनन्त आह्वान
यही मेरे जीवन का सार,
अतिथि ! क्या ले जाओगे साथ
मुग्ध मेरे आँसू दो चार ?

१९२८ अप्रैल

HindiBooksOnline.blogspot.com

मेरा एकान्त

कामना की पलकों में भूल
नवल फूलों के छूकर अङ्ग,
लिए मतवाला सौरभ साथ
लजीली लतिकायें भर अङ्क,
यहाँ मत आओ मत्त समीर !
सो रहा है मेरा एकान्त !

लालसा की मदिरा में चूर
क्षणिकभंगुर यौवन पर भूल,
साथ लेकर भौंरों की भीर
विलासी हे उपवन के फूल !
बनाओ इसे न लीलाभूमि
तपोवन है मेरा एकान्त !

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

निराली कल कल में अभिराम
मिलाकर मोहक मादक गान,
छलकती लहरों में उद्दाम
छिपा अपना अस्फुट आह्वान,
न कर हे निर्झर ! भङ्ग समाधि
साधना है मेरा एकान्त !

विजन वन में बिखरा कर राग
जगा सोते प्राणों की प्यास,
ढालकर सौरभ में उन्माद
नशीली फैलाकर निश्वास,
लुभाओ इसे न मुग्ध वसन्त !
विरागी है मेरा एकान्त !

गुलाबी चल चितवन में बोर
सजीले सपनों की मुस्कान,
झिलमिलाती अवगुण्ठन डाल
सुनाकर परिचित भूली तान,
जला मत अपना दीपक आश !
न खो जाये मेरा एकान्त !

HindiBooksOnline.blogspot.com

उनसे

निराशा के झोंकों ने देव !
भरी मानसकुंजों में धूल,
वेदनाओं के झञ्झावात
गए बिखरा यह जीवनफूल ।

बरसते थे मोती अवदात
जहाँ तारकलोकों से टूट,
जहाँ छिप जाते थे मधुमास
निशा के अभिसारों को लूट ।

जला जिसमें आशा के दीप
तुम्हारी करती थी मनुहार,
हुआ वह उच्छ्वासों का नीड़
रुदन का सूना स्वप्नागार ।

× × ×

हृदय पर अङ्कित कर सुकुमार
तुम्हारी अवहेला की चोट,
बिछाती हूँ पथ में करुणेश !
छलकती आँखें हँसते ओठ ।

१९२१ ई०

HindiBooksOnline.blogspot.com

मेरा जीवन

स्वर्ग का था नीरव उच्छ्वास
देव-वीणा का टूटा तार,
मृत्यु का क्षणभंगुर उपहार
रत्न वह प्राणों का शृंगार;
नई आशाओं का उपवन
मधुर वह था मेरा जीवन !

क्षीरनिधि की थी सुप्त तरंग
सरलता का न्यारा निर्झर
हमारा वह सोने का स्वप्न
प्रेम की चमकीली आकर;
शुभ्र जो था निर्मेघ गगन
सुभग मेरा संगी जीवन !

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

अलक्षित आ किसने चुपचाप
सुना अपनी सम्मोहन तान,
दिखाकर माया का साम्राज्य
बना डाला इसको अज्ञान ?
मोह मदिरा का आस्वादन
किया क्यों हे भोले जीवन !

तुम्हें ठुकरा जाता नैराश्य
हँसा जाती है तुमको आश,
नचाता मायावी संसार
लुभा जाता सपनों का हास;
मानते विष को संजीवन
मुग्ध मेरे भूले जीवन !

न रहता भौंरों का आह्वान
नहीं रहता फूलों का राज्य,
कोकिला होती अन्तर्धान
चला जाता प्यारा ऋतुराज;
असम्भव है चिर सम्मेलन,
न भूलो क्षणभंगुर जीवन !

विकसते मुरझाने को फूल
उदय होता छिपने को चन्द,
शून्य होने को भरते मेघ
दीप जलता होने को मन्द :
यहां किसका अनन्त यौवन ?
अरे अस्थिर छोटे जीवन !

HindiBooksOnline.blogspot.com

छलकती जाती है दिन रैन
लबालब तेरी प्याली मीत,
ज्योति होती जाती है क्षीण
मौन होता जाता संगीत;
करो नयनों का उन्मीलन
क्षणिक है मतवाले जीवन!

शून्य से बन जाओ गम्भीर
त्याग की हो जाओ झङ्कार,
इसी छोटे प्याले में आज
डुबा डालो सारा संसार;
लजा जायें यह मुग्ध सुमन
बनो ऐसे छोटे जीवन!

सखे! यह माया का देश
क्षणिक है मेरा तेरा सङ्ग,
यहाँ मिलता काँटों में बन्धु!
सजीला सा फूलों का रङ्ग;
तुम्हें करना विच्छेद सहन
न भूलो हे प्यारे जीवन!

१९२७ फरवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

सूना संदेश

हुए हैं कितने अन्तर्धान
छिन्न होकर भावों के हार,
घिर घन से कितने उच्छ्वास
उड़े हैं नभ में होकर क्षार

शून्य को छूकर आये लौट
मूक होकर मेरे निश्वास,
बिखरती है पीड़ा के साथ
चूर होकर मेरी अभिलाष !

छा रही है बनकर उन्माद
कभी जो थी अस्फुट झंकार,
काँपता सा आँसू का विन्दु
बना जाता है पारावार !

खोज जिसकी वह है अज्ञात
शून्य वह है भेजा जिस देश,
लिए जाओ अनन्त के पार
प्राण वाहक सूना संदेश !

१६२८ मार्च

HindiBooksOnline.blogspot.com

प्रतीक्षा—

जिस दिन नीरव तारों से.
बोलीं किरणों की अलकें,
'सो जाओ अलसाई हैं
सुकुमार तुम्हारी पलकें':

जब इन फूलों पर मधु की
पहली बूँदें बिखरी थीं,
आँखें पंकज की देखीं
रवि ने मनुहार भरीं सीं।

दीपकमय कर डाला जब
जलकर पतंग ने जीवन,
सीखा बालक मेघों ने
नभ के आँगन में रोदन;

उजियारी अवगुण्ठन में
विधु ने रजनी को देखा,
तब से मैं ढूँढ रही हूँ
उनके चरणों की रेखा।

HindiBooksOnline.blogspot.com

मैं फूलों में रोती वे
बालारुण में मुस्काते,
मैं पथ में बिछ जाती हूँ
वे सौरभ में उड़ जाते।

वे कहते हैं उनको मैं
अपनी पुतली में देखूँ,
यह कौन बता जायेगा
किसमें पुतली को देखूँ?

मेरी पलकों पर रातें
बरसाकर मोती सारे,
कहतीं 'क्या देख रहे हैं
अविराम तुम्हारे तारे'?

तम ने इन पर अंजन से
बुन बुन कर चादर तानी,
इन पर प्रभात ने फेरा
आकर सोने का पानी!

इन पर सौरभ की साँसें
लुट लुट जातीं दीवानी,
यह पानी में बैठी हैं
बन स्वप्न-लोक की रानी!

कितनी बीतीं पतझारें
कितने मधु के दिन आये,
मेरी मधुमय पीड़ा को
कोई पर ढूँढ न पाये!

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

झिप झिप आंखें कहती हैं
यह कैसी है अनहोनी !
हम और नहीं खेलेंगी
उनसे यह आंखमिचौनी ।

अपने जर्जर अञ्चल में
भरकर सपनों की माया,
इन थके हुए प्राणों पर
छाई विस्मृति की छाया !

× × ×

मेरे जीवन की जागृति !
देखो फिर भूल न जाना,
जो वे सपना बन आवें
तुम चिरनिद्रा बन जाना !

१९२९ अप्रैल

HindiBooksOnline.blogspot.com

विस्मृति

जहाँ है निद्रामग्न वसन्त
तुम्हीं हो वह सूखा उद्यान,
तुम्हीं हो नीरवता का राज्य
जहाँ खोया प्राणों ने गान;

निराली सी आँसू की बूँद
छिपा जिसमें असीम अवसाद,
हलाहल या मदिरा का घूँट
डुबा जिसने डाला उन्माद !

जहाँ बन्दी मुरझाया फूल
कली की हो ऐसी मुस्कान,
ओसकन का छोटा आकार
छिपा जो लेता है तूफान;

जहाँ रोता है मौन अतीत
सखी ! तुम हो ऐसी झङ्कार,
जहाँ बनती अलोक समाधि
तुम्हीं हो ऐसा अन्धकार ।

जहाँ मानस के रत्न विलीन
तुम्हीं हो ऐसा पारावार,
अपरिचित हो जाता है मीत
तुम्हीं हो ऐसा अजनबार !

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

मिटा देता आँसू के दाग
तुम्हारा यह सोने सा रङ्ग,
डुबा देती बीता संसार
तुम्हारी यह निस्तब्ध तरङ्ग।

भस्म जिसमें हो जाता काम
तुम्हीं वह प्राणों का संन्यास
लेखनी हो ऐसी विस्मीत
मिटा जो जाती है इतिहास :

साधनाओं का दे उपहार
तुम्हें पाया है मैंने अन्त;
लुटा अपना सीमित ऐश्वर्य
मिला है यह वैराग्य अनन्त।

× × ×

भुला डालो जीवन की साध
मिटा डालो बीते का लेश:
एक रहने देना यह ध्यान
क्षणिक है यह मेरा परदेश !

१९२१ फरवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

अनन्त की ओर

गरजता सागर तम है घोर
घटा घिर आई सूना तीर,
अंधेरी सी रजनी में पार
बुलाते हो कैसे बेपीर ?

नहीं है तरिणी कर्णाधार
अपरिचित है वह तेरा देश,
साथ है मेरे निर्मम देव !
एक बस तेरा ही संदेश।

× × ×

हाथ में लेकर जर्जर बीन
इन्हीं बिखरे तारों को जोर,
लिए कैसे पीड़ा का भार
देव आऊँ अनन्त की ओर !

१६२८ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

स्मारक

झुकने से सौरभ के साथ
लिए मिटते स्वप्नों का हार,
मधुर जो सोने का सङ्गीत
जा रहा है जीवन के पार :

तुम्हीं अपने प्राणों में मौन
बाँध लेते उसकी झङ्कार।

काल की लहरों में अविराम
बुलबुले होते अन्तर्धान,
हाय उनका छोटा ऐश्वर्य्य
डूबता लेकर प्यासे प्राण ;

समाहित हो जाती वह याद
हृदय में तेरे हे पाषाण !

पिघलती आँखों के संदेश
आँसुओं के वे पारावार,
भग्न आशाओं के अवशेष
जली अभिलाषाओं के क्षार ;

मिलाकर उच्छ्वासों की धूलि
रंगाई है तूने तस्वीर !

HindiBooksOnline.blogspot.com

गूँथ बिखरे सूखे अनुराग
बीन करके प्राणों के दान,
मिले रज में सपनों को ढूँढ
खोज कर वे भूले आह्वान ;

अनोखे से माली निर्जीव
बनाई है आँसू की माल !

मिटा जिनको जाता है काल
अमिट करते हो उनकी याद,
डुबा देता जिसको तूफान
अमर कर देते हो वह साध,

मूक जो हो जाती है चाह
तुम्हीं उसका देते संदेश।

राख में सोने का साम्राज्य
शून्य में रखते हो सङ्गीत,
धूल से लिखते हो इतिहास
बिन्दु में भरते हो बारीश ;

तुम्हीं में रहता मूक वसन्त
अरे सूखे फूलों के हास !

१९२७ नवम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

मोल

झिलमिल तारों की पलकों में
स्वप्निल मुस्कानों को डाल,
मधुर वेदनाओं से भर के
मेघों के छायामय थाल;

रंग डाले अपनी लाली में
गूँथ नये ओसों के हार,
विजन विपिन में आज बावली
बिखराती हो क्यों शृंगार ?

फूलों के उच्छ्वास बिछाकर
फैला फैला स्वर्ण पराग,
विस्मृति सी तुम मादकता सी
गाती हो मदिरा सा राग;

जीवन का मधु बेच रही हो
मतवाली आँखों में घोल
क्या लोगी ? क्या कहा सजनि
'इसका दुखिया आँसू है मोल' !

१९२९ जनवरी

HindiBooksOnline.blogspot.com

दीप

मूक करके मानस का ताप
सुलाकर वह सारा उन्माद,
जलाना प्राणों को चुपचाप
छिपाये रोता अन्तर्नाद;
कहाँ सीखी यह अद्भुत प्रीति?
मुग्ध हे मेरे छोटे दीप!

चुराया अन्तस्थल में भेद
नहीं तुमको वाणी की चाह,
भस्म होते जाते हैं प्राण
नहीं मुख पर आती है आह;
मौन में सोता है सङ्गीत—
लजीले मेरे छोटे दीप!

क्षार होता जाता है गात
वेदनाओं का होता अन्त,
किन्तु करते रहते हो मौन
प्रतीक्षा का आलोकित पन्थ;
सिखा दो ना नेही की रीति—
अनोखे मेरे नेही दीप!

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

पड़ी है पीड़ा संज्ञाहीन
साधना में डूबा उद्गार,
ज्वाल में बैठा हो निस्तब्ध
स्वर्ण बनता जाता है प्यार:
चिता है तेरी प्यारी मीत—
वियोगी मेरे बुझते दीप ?

अनोखे से नेहों के त्याग !
निराले पीड़ा के संसार !
कहाँ होते हो अन्तर्धान
लुटा अपना सोने सा प्यार ?
कभी आयेगा ध्यान अतीत—
तुम्हें क्या निर्वाणोन्मुख दीप ?

१९२१ नवम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

वरदान

तरल आँसू की लड़ियाँ गूँथ
इन्हीं ने काटी काली रात,
निराशा का सूना निर्माल्य
चढ़ाकर देखा फीका प्रात।

इन्हीं पलकों ने कंटक हीन
किया था वह मारग वेपीर,
जहाँ से छूकर तेरे अङ्ग
कभी आता था मंद समीर !

सजग लखती थीं तेरी राह
सुलाकर प्राणों में अवसाद;
पलक प्यालों से पी पी देव !
मधुर आसव सी तेरी याद।

अश्रु जल का जल ही परिधान
रचा था बूँदों में संसार,
इन्हीं नीले तारों में मुग्ध
साधना सोती थी साकार

आज आये हो हे करुणेश !
इन्हें जो तुम देने वरदान,
गलाकर मेरे सारे अङ्ग
करो दो आँखों का निर्माण !

१९२८ दिसम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

स्मृति

विस्मृति तिमिर में दीप हो
भवितव्य का उपहार हो ;
बीते हुए का स्वप्न हो
मानव हृदय का सार हो ।

तुम सान्त्वना हो दैव की
तुम भाग्य का वरदान हो ;
टूटी हुई झंकार हो
गत काल की मुस्कान हो

उस लोक का संदेश हो
इस लोक का इतिहास हो ;
भूले हुए का चित्र हो
सोई व्यथा का हास हो ।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

अस्थिर चपल संसार में
तुम हो प्रदर्शक संगिनी :
निस्सार मानस कोष में
हो मञ्जु हीरक की कनी।

दुर्दैव ने उर पर हमारे
चित्र जो अङ्कित किए,
देकर सजीला रंग तुमने
सर्वदा रञ्जित किए :

तुम हो सुधाधारा सदा
सूखे हुए अनुराग को :
तुम जन्म देती हो सखी !
आसक्त को वैराग्य को।

तेरे बिना संसार में
मानव हृदय स्मशान है :
तेरे बिना हे संगिनी !
अनुराग का क्या मान है ?

१९२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

याद

निठुर होकर डालेगा पीस
इसे अब सूनेपन का भार,
गला देगा पलकों में मूँद
इसे इन प्राणों का उद्‌गार :

खींच लेगा असीम के पार
इसे छलिया सपनों का हास,
बिखरते उच्छ्वासों के साथ
इसे बिखरा देगा नैराश्य।

सुनहरी आशाओं का छोर
बुलायेगा इसको अज्ञात,
किसी विस्मृत वीणा का राग
बना देगा इसको उद्‌भ्रान्त।

× × ×

छिपेगी प्राणों में बन प्यास
घुलेगी आँखों में हो राग,
कहाँ फिर ले जाऊँ हे देव!
तुम्हारे उपहारों की याद?

१९२९ जुलाई

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीरव भाषण

गिरा जब हो जाती है मूक
देख भावों का पारावार,
तोलते हैं जब बेसुध प्राण
शून्य से करुणकथा का भार ;
मौन बन जाता आकर्षण
वहीं मिलता नीरव भाषण।

जहाँ बनती पतझार वसन्त
जहाँ जागृति बनती उन्माद,
जहाँ मदिरा देती चैतन्य
भूलना बनता मीठी याद ;
जहाँ मानस का मुग्ध मिलन
वहीं मिलता नीरव भाषण

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

जहाँ विष देना है अनन्त
जहाँ पीड़ा है प्यारी मीत,
अश्रु हैं नयनों का शृंगार
जहाँ ज्वाला बनती नवनीत;
मृत्यु बन जाती नवजीवन
वहीं रहता नीरव भाषण।

नहीं जिसमें अनन्त विच्छेद
बुझा पाता जीवन की प्यास,
करुण नयनों का संचित मौन
सुनाता कुछ अतीत की बात;
प्रतीक्षा बन जाती अंजन
वहीं मिलता नीरव भाषण।

पहन कर जब आँसू के हार
मुस्कराती वे पुतली श्याम,
प्राण में तन्मयता का हास
माँगता है पीड़ा अविराम;
वेदना बनती संजीवन
वहीं मिलता नीरव भाषण।

जहाँ मिलता पङ्कज का प्यार
जहाँ नभ में रहता आराध्य,
ढाल देना प्राणों में प्राण
जहाँ होती जीवन की साध;
मौन बन जाता आवाहन
वहीं रहता नीरव भाषण।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

जहाँ है भावों का विनिमय
जहाँ इच्छाओं का संयोग,
जहाँ सपनों में है अस्तित्व
कामनाओं में रहता योग;
महानिद्रा बनता जीवन
वहीं मिलता नीरव भाषण।

जहाँ आशा बनती नैराश्य
राग बन जाता है उच्छ्वास,
मधुर वीणा है अन्तर्नाद
तिमिर में मिलता दिव्य प्रकाश;
हास बन जाता है रोदन
वहीं मिलता नीरव भाषण।

१६२६

HindiBooksOnline.blogspot.com

अनोखी भूल

जिन चरणों पर देव लुटाते—
थे अपने अमरों के लोक,
नखचन्द्रों की कान्ति लजाती
थी नक्षत्रों के आलोक;

रवि शशि जिन पर चढ़ा रहे
अपनी आभा अपना राज,
जिन चरणों पर लोट रहे थे
सारे सुख सुषमा के साज;

जिनकी रज धो धो जाता था
मेघों का मोती सा नीर,
जिनकी छवि अंकित कर लेता
नभ अपना अन्तस्थल चीर;

मैं भी भर भीने जीवन में
इच्छाओं के रुदन अपार,
जला वेदनाओं के दीपक
आई उस मन्दिर के द्वार।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

क्या देता मेरा सूनापन
उनके चरणों को उपहार ?
बेसुध सी मैं घर आई
उन पर अपने जीवन की हार !

× × ×

मधुमाते हो विहँस रहे थे
जो नन्दन कानन के फूल,
हीरक बन कर चमक गई
उनके अञ्चल में मेरी भूल !

१६२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

आँसू की माला

उच्छ्वासों की छाया में
पीड़ा के आलिंगन में,
निश्वासों के रोदन में
इच्छाओं के चुम्बन में;

सूने मानस मन्दिर में
सपनों की मुग्ध हँसी में;
आशा के आवाहन में
बीते की चित्रपटी में।

उन थकी हुई सोती सी
ज्योतिष्ना की पलकों में,
बिखरी उलझी हिलती सी
मलयानिल की अलकों में;

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

रजनी के अभिसारों में
नक्षत्रों के पहरों में,
ऊषा के उपहासों में
मुस्काती सी लहरों में।

जो बिखर पड़े निर्जन में
निर्झर सपनों के मोती,
मैं ढूँढ़ रही थी लेकर
धुंधली जीवन की ज्योती;

उस सूने पथ में अपने
पैरों की चाप छिपाये,
मेरे नीरव मानस में
वे धीरे धीरे आये!

मेरी मदिरा मधुवाली
आकर सारी ढुलका दी,
हँसकर पीड़ा से भर दी
छोटी जीवन की प्याली;

मेरी बिखरी वीणा के
एकत्रित कर तारों को;
टूटे सुख के सपने दे
अब कहते हैं गाने को।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

यह मुरझाये फूलों का
फीका सा मुस्काना है,
यह सोती सी पीड़ा को
सपनों से टुकराना है;

गोधूली के ओठों पर
किरणों का बिखराना है
यह सूखी पंखड़ियों में
मारुत का इठलाना है।

× × ×

इस मीठी सी पीड़ा में
डूबा जीवन का प्याला,
लिपटी सी उतराती है
केवल आँसू की माला।

१९२७ नवम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

फूल

मधुरिमा के, मधु के अवतार
सुधा से, सुषमा से, छविमान,
आँसुओं में सहमें अभिराम
तारकों से हे मूक अजान !
सीखकर मुस्काने की बान
कहाँ आये हो कोमल प्राण ?

स्निग्ध रजनी से लेकर हास
रूप से भर कर सारे अङ्ग,
नये पल्लव का घूंघट डाल
अछूता ले अपना मकरन्द,
दृढ़ पाया से यह देश ?
स्वर्ग के हे मोहक सन्देश !

रजत् किरणों से नैन पखार
अनोखा ले सौरभ का भार,
छलकता लेकर मधु का कोष
चले आये एकाकी पार;
कहो क्या आये मारग भूल ?
मञ्जु छोटे मुस्काते फूल !

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

उषा के छू आरक्त कपोल
किलक पड़ता तेरा उन्माद,
देख तारों के बुझते प्राण
न जाने क्या आ जाता याद ?
हेरती है सौरभ की हाट
कहो किस निर्मोही की बाट ?

चाँदनी का शृंगार समेट
अधखुली आँखों की यह कोर,
लुटा अपना यौवन अनमोल
ताकती किस अतीत की ओर ?
जानते हो यह अभिनव प्यार
किसी दिन होगा कारागार ?

कौन वह है सम्मोहन राग
खींच लाया तुमको सुकुमार ?
तुम्हें भेजा जिसने इस देश
कौन वह है निष्ठुर कर्तार ?
हँसो पहनो काँटों के हार
मधुर भोलेपन के संसार !

१९२७ सितम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

खोज

'प्रथम प्रणय की सुषमा सा
यह कलियों की चितवन में कौन?
कहता है 'मैंने सीखा उनकी—
आँखों से सस्मित मौन'।

घूँघट पट से झांक सुनाते
ऊषा के आरक्त कपोल,
'जिसकी चाह तुम्हें है उसने
छिड़की मुझ पर लाली घोल'।

कहते हैं नक्षत्र 'पड़ी हम पर
उस माया की झाईं';
कह जाते वे मेघ 'हमीं उसकी—
करुणा की परछाईं'।

HindiBooksOnline.blogspot.com

वे मन्थर सी लोल हिलोर
फैला अपने अञ्चल छोर,
कह जातीं 'उस पार बुलाता -
है हमको तेरा चितचोर'।

यह कैसी छलना निर्मम
कैसा तेरा निष्ठुर व्यापार ?
तुम मन में हो छिपे मुझे
भटकाता है सारा संसार !

१६२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com

जो तुम आ जाते एक बार

कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग;
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग;

आँसू लेते वे पद पखार।

हँस उठते पल में आर्द्र नैन
धुल जाता ओठों से विषाद,
छा जाता जीवन में वसन्त
लुट जाता चिर संचित विराग;

आँखें देतीं सर्वस्व वार।

१९२९ नवम्बर

HindiBooksOnline.blogspot.com

परिचय

जिसमें नहीं सुवास नहीं जो
करता सौरभ का व्यापार,
नहीं देख पाता जिसकी
मुस्कानों को निष्ठुर संसार ;

जिसके आँसू नहीं माँगते
मधुपों से करुणा की भीख,
मदिरा का व्यवसाय नहीं
जिसके प्राणों ने पाया सीख

मोती बरसे नहीं न जिसको
छू पाया उन्मत्त बयार,
देखी जिसने हाट न जिस पर
ढुल जाता माली का प्यार ;

चढ़ा न देवों के चरणों पर
गूँथा गया न जिसका हार
जिसका जीवन बना न अबतक
उन्मादों का स्वप्नागार।

HindiBooksOnline.blogspot.com

नीहार

निर्जन वन के किसी अँधेरे
कोने में छिपकर चुपचाप,
स्वप्नलोक की मधुर कहानी
कहता सुनता अपने आप।

किसी अपरिचित डाली से
गिरकर जो निरस जंगली फूल;
फिर पथ में बिछुकर आँखों में
चुपके से भर लेता धूल।

× × ×

उसी सुमन सा पल भर हँसकर
सूने में हो छिन्न मलीन,
झड़ जाने दो जीवन-माली!
मुझको रहकर परिचय हीन!

१९२६ मई

HindiBooksOnline.blogspot.com